ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 02, 2023

'प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन''

: शोध निर्देशक :
डॉ. अवधेश अराह
प्रोफसर एण्ड डीन
डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन एण्ड फिजिकल एज्युकेशन,
माधव विश्वविध्यालय, राजस्थान

: शोधार्थी :
ख्याति बी. पटेल
पीएच.डी. स्कॉलर
माधव विश्वविध्यालय, पींडवारा (शिरोही), राजस्थान
MO. 7567255266
Mail ID : patelkhyatiben@gmail.com

❖ प्रस्तावना :

संस्कार निर्माण के उद्देश्य से जो शिक्षा दी जाती है वह शिक्षा नैतिक शिक्षा है। नैतिक शिक्षा नैतिक नियम की जानकारी मात्र नहीं है, वह बालक के संस्कारित कर उनका रुपांतरण करती है। नैतिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों में संस्कारों का निर्माण करना है।

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बालकों में जीवन मूल्यों, स्वस्थ दृष्टिकोण एवं मूल्यगत व्यवहारों का सक्रिय विकास हो ये स्वीकार किया है।

ज्ञान का व्यवहार एवं आचरण से उतारना ही सच्ची नैतिक शिक्षा है। बालक अनुकरणशील होते है, जिस प्रकार कच्ची मिट्टी पर अंकित चिन्ह के पकजाने पर स्थायी हो जाता है इस प्रकार शिक्षक के आचरण का प्रभाव जो बालक के मानस पर पडता है, वह आजीवन स्थायी रहता है। अतः शिक्षक को ज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ व्यवहारत्मक पक्ष को भी विशेष रुप से संवारना अपेक्षित है।

विद्यालय जिधर चाहे बालक के मानस को मोड सकता है। अतः बालक के नैतिक शिक्षा को संस्कारित कर, तत्पर एवं जिज्ञासु बनाना होगा, क्योंकि विद्यार्थी राष्ट्र की दृढ नीव है।

❖ नैतिक शिक्षा :

संस्कृत में नय धातु का अर्थ है जाना, ले जाना तथा रक्षा करना। इसी से नीति शब्द बना जिसका अर्थ है कि ऐसा व्यवहार जिसके अनुकूल चलने से अपनी और सबकी रक्षा हो सके। इस प्रकार नैतिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसके द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति का हित होता रहे।

प्रो.के.डेविस के अनुसार :

''नैतिकता कर्तव्य की वह आन्तरिक भावना है जिसमें उचित-अनुचित का विचार सन्निहित हो।''

महर्षि अरविन्द के अनुसार :

''शिक्षा संस्कार का निर्माण एवं सहानुभूति का प्रकाशन है।''

अनुसंधान का महत्व सम्भवित लाभ तथा व्यापकता पर आधारित होता है। समस्या परिणाम से तत्काल लाभ हो यह आवश्यक नहीं है, लाभ तो भविष्य में भी हो सकता है कई प्राप्त निष्कर्षों से दूसरे अनुसंधान का मार्ग खुल जाता है तथा कार्य का महत्व और अधिक बढ जाता है।

❖ समस्या कथन :

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 02, 2023

''प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन'॥

❖ **समस्या का उद्देश्य :**

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित है।

१. प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय की भूमिका का अध्ययन करना।

२. प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर शहरी विद्यालय की भूमिका का अध्ययन करना।

३. प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना।

❖ **परिकल्पना :**

प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

❖ **परिसीमन :**

शोधकर्ता ने अपनी समस्या का परिसीमन निम्न रुप से किया -

लिंग	लडके-लडकियाँ दोनो
कक्षा	प्राथमिक स्तर – पांचवी कक्षा
विद्यालय	ग्रामीण एवं शहरी
राज्य	गुजरात
जिल्ला	पाटन

❖ **न्यादर्श :**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने गुजरात राज्य के पाटन जिल्ले के तीम ग्रामीण एवं तीन शहर के प्राथमिक विद्यालयों के २०० छात्रों का चयन किया।

ग्रामीण विद्यालय के छात्र	१००
शहरी विद्यालय के छात्र	१००
कुल योग	**२००**

❖ **अध्ययन विधि :**

प्रस्तुत अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

❖ **उपकरण :**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करने के लिए ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय सम्बन्धी स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया।

❖ **सांख्यिकी तकनीक :**

अध्ययन कार्य में मध्यमान, प्रमाण विचलन और टी-टेस्ट का उपयोग किया।

❖ **प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी विश्लेषण :**

प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका का मध्यमान, प्रमाण विचलन एवं टी-टेस्ट :

क्र.सं.	**नैतिक शिक्षा**	**मध्यामान**	**पमाय विचलन**	**टी-टेस्ट**	**सार्थकता स्तर**

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

१	ग्राम्य विद्यालय	२९.५९	४.३७७	३.९५	सार्थक
२	शहरी विद्यालय	३१.३५	४.४९७		

उपरोकत सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय की भूमिका का मध्यमान २९.५९ तथा प्रमाण विचलन ४.३७७ है। जबकि प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर शहरी विद्यालय की भूमिका का मध्यमान ३१.३५ तथा प्रमाण विचलन ४.४९७ है। प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय सम्बन्धि भूमिका का मध्यमान शहरी विद्यालय सम्बन्धी भूमिका के मध्यमान से कम है अर्थात् प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर शहरी विद्यालय सम्बन्धि भूमिका का मध्यमान ग्राम्य विद्यालय सम्बन्धी भूमिका के मध्यमान से अधिक है। मध्यमान अधिक होने के कारण प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर शहरी विद्यालय सम्बन्धी भूमिका का मध्यमान ग्राम्य विद्यालय सम्बन्धी भूमिका के मध्यमान से उच्च है।

प्रस्तुत सारणी में गणना किया गया **'t'** मूल्य ३.९५ है। ०.०१ विश्वास स्तर का मूल्य २.५८ है जिससे कि गणना किया गया मूल्य ३.९५, ०.०१ विश्वास स्तर का मूल्य २.५८ से अधिक है। जो कि अन्तर की सार्थकता को अभिव्यक्त करता है।

❖ **परिकल्पना से सम्बन्धीत निष्कर्ष :**

प्राप्त प्रदत्तो के आधार पर प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा के आधार पर ग्राम्य विद्यालय एवं शहरी विद्यालय की भूमिका में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत है।

❖ **सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि** :

१. ढोढियाल सच्चिदानंद तथा फाटक अरविंद : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (१९८२)
२. गैरिट, हैनरी ई. : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली
३. डॉ.बी.एल.वत्स : नैतिक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
४. वेडेल एन : माता पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पति के बीच में सार्थक संबंध की पहचान, लघुशोध प्रबंध, शोध सारिका आंतर्राष्ट्रीय ७२ (१२), (२०११)
५. बुच. एम.बी. : सेकेंण्डरी सर्वे ओफ रिसर्च इन एज्यूकेशन (१९७२-१९७८)
६. शर्मा भारती : ग्रमीण ग्राम्य विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थीयों के नैतिक मूल्यों पर आत्मसम्प्रत्यय के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल ओफ रिसर्च इन सोशियल सायन्स, तश्रि.९, चरू-२०१९